जन वाचन आंदोलन

जनवाचन आंदोलन का मकसद है। किताबों को गाँव-गाँव ले जाना, इन किताबों को नवपाठकों के बीच पढ़कर सुनाना और पढ़वाकर सुनना। गाँव की जनता के पास आज भी पढ़ने-लिखने के लिए स्तरीय किताबें नहीं हैं और जो हैं भी वे बेहद महँगी हैं। भारत ज्ञान विज्ञान समिति ग्रामीण जन तक कम कीमत और सरल भाषा में देशभर के मशहूर लेखकों की किताबें पहुँचाना चाहती है, ताकि गाँव-गाँव में जन वाचन, पढ़ाई और पुस्तकालय संस्कृति पैदा हो सके। संपूर्ण साक्षरता अभियान से जो नवपाठक निकलकर सामने आए हैं, वे अपने साक्षरता के अर्जित कौशल को बनाए रख सकें, उनके सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का स्तर बढ़े और वे जागरुक होकर अपने बुनियादी हकों की लड़ाई के लिए लामबंद हो सकें, यह इस अभियान का प्राथमिक उद्देश्य है। भारतीय लोकतंत्र की रक्षा के लिए गाँव के लोग आगे आएँ, इसके लिए भी इस तरह की चेतना का विकास जरूरी है। साक्षरता केवल अक्षर सीखने का काम नहीं है, यह पूरी दुनिया को जानने का काम है।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति
मूल्य : 10 रुपये

डायन व अन्य कहानियाँ

संजीव

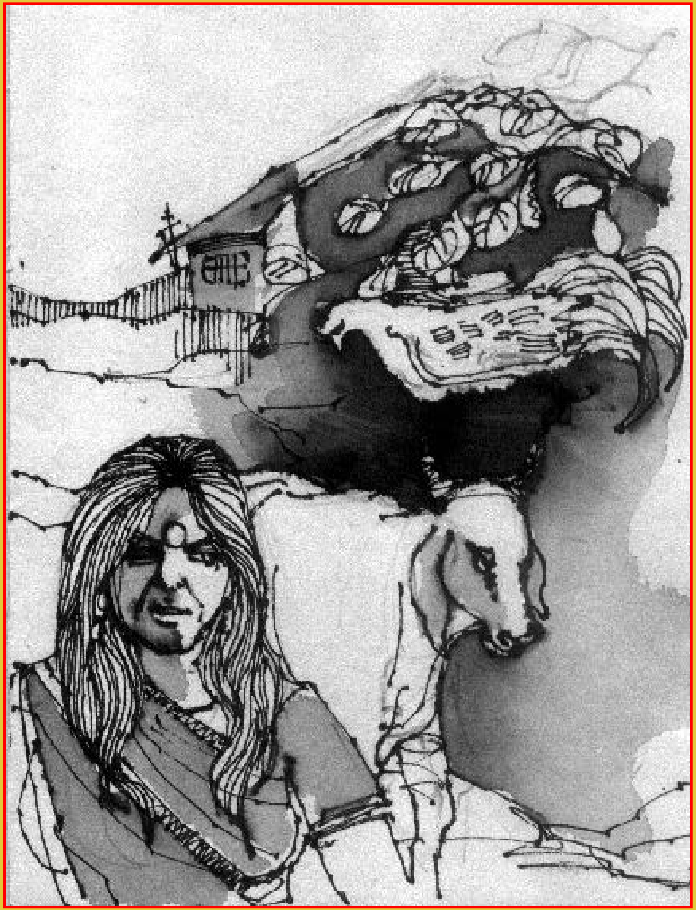

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

डायन व अन्य कहानियाँ: संजीव
Dyain wa Aanaya Kahaniya: Sanjeev

नवपाठकों के लिए भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

© सर्वाधिकार सुरक्षित
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

पुस्तकमाला संपादक: असद ज़ैदी और विष्णु नागर
कार्यकारी संपादक: संजय कुमार
Series Editor : Asad Zaidi and Vishnu Nagar
Executive Editor : Sanjay Kumar

रेखांकन: पंकज झा
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 1997,1999, 2003

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा देशभर में चलाए जा रहे जन वाचन आंदोलन के तहत किया गया है ताकि लोगों में पढ़ने-लिखने की आदत पैदा हो सके। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य गांव के पाठकों को सस्ती और सरल भाषा में देश के मशहूर रचनाकर्मियों द्वारा लिखी गई उत्कृष्ट पुस्तकें उपलब्ध करवाना है। खासकर उन नवपाठकों के लिए जो देशभर में चलाए गए संपूर्ण साक्षरता अभियान से निकलकर सामने आए हैं।

मूल्य: 10 रुपये

Published by **Bharat Gyan Vigyan Samithi**, ***Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110017, Phone : 011 - 6569943, Fax : 91 - 011 - 6569773,***
email: bgvs@vsnl.net

डायन व अन्य कहानियाँ

संजीव

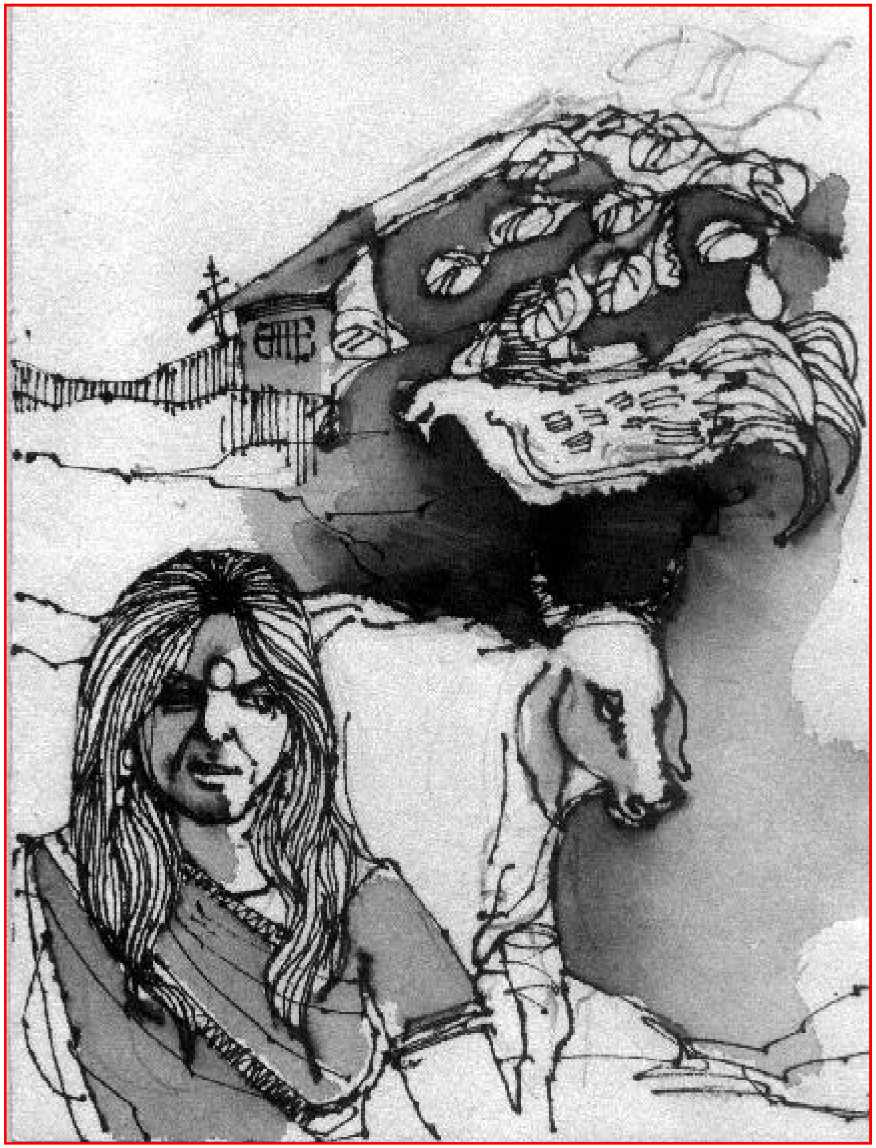

डायन

सूकर का मुर्गा मर गया। नीरल की गाय बिसुक गई। माला की लौकी की लता में बतिया लग-लग कर गिर जाती। सूकर, नीरल और माला सबकी नजर पूनो पर थी। यह सब उसी की करतूत है।

पचास की है पूनो। एक आंख कंजी। देखने में मनहूस लगती है। एक घर से दूसरे घर चर्चा चली। पूरे गांव में फैल गई। हर घर में कोई न कोई नुकसान हुआ था। नुकसान की जड़ पूनो को माना गया। सारा गांव ओझा के पास गया। ओझा ने बताया कि पूनो डायन है। इसे मार नहीं डाला तो गांव पर कोई विपत्ति आकर रहेगी।

इसी बीच गांव में एक अजीब-सी बीमारी फैल गई। कै-दस्त होती। झाड़-फूँक करायी जाती तो कोई असर नहीं होता। देखते-देखते गांव के तीन लड़के और एक औरत गुजर गए। लोगों का गुस्सा फूट पड़ा। इस डायन को खत्म नहीं किया गया तो यह पूरे गांव को खा जाएगी। कुल्हाड़ी, दाव जिसके हाथ जो लगा, उसने उठा लिया। सब बुढ़िया पूनो के घर पर टूट पड़े।

पूनो रोती-गिड़गिड़ाती रही। वह डायन या हत्यारी नहीं है। वह

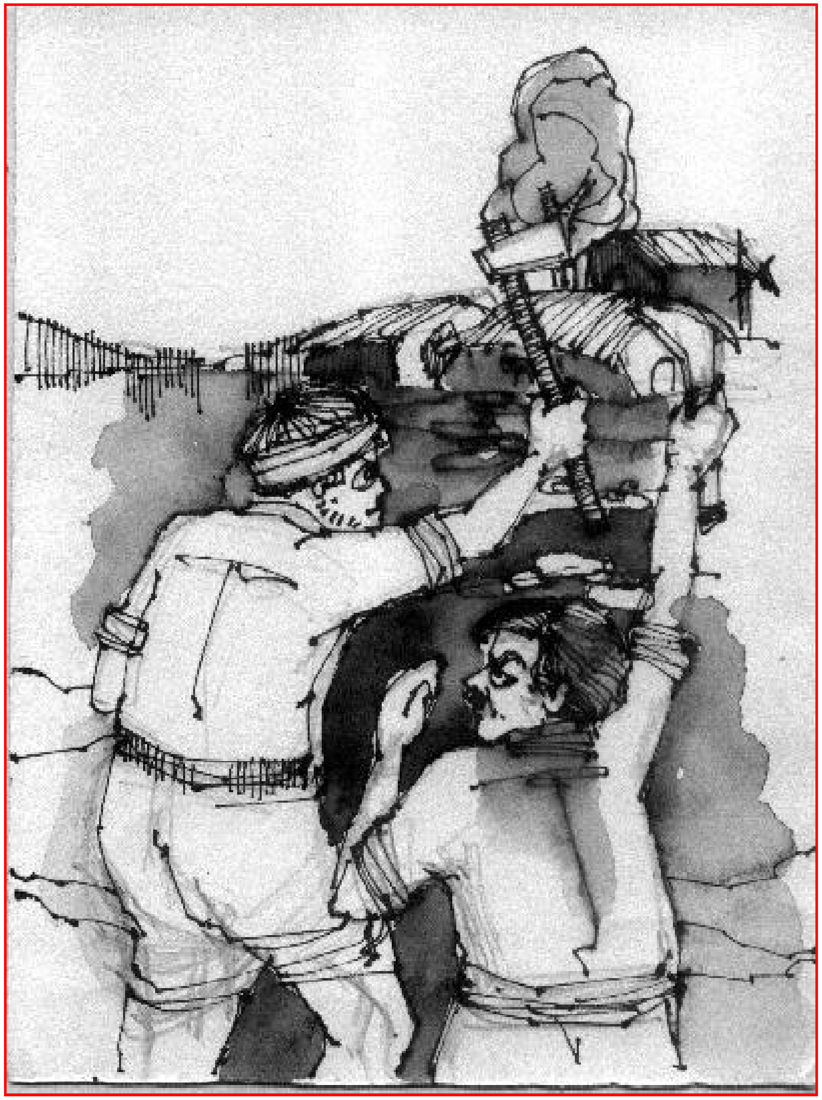

इसी गांव की बहू है। इन मौतों का उसे भी उतना ही अफसोस है। मगर लोगों पर खून सवार था। उसे घसीट कर, कोंच-कोंच कर, पीट-पीट कर, मार डाला गया। उसका झोपड़ा पीट-पीट कर गिरा दिया गया। उसमें आग

लगा दी गई।

सूकर का बेटा मदन रांची में पढ़ता था। वह ज्ञान-विज्ञान जत्थे का सक्रिय सदस्य था। खबर पाकर वह गांव आया। सिर पर हाथ रख कर बैठ गया-''यह क्या कर डाला तुम लोगों ने?''

''बेटा उसके चलते पूरा गांव तबाह था,'' एक बूढ़े ने कहा।

''अगर उसमें इतनी ही ताकत थी तो वह अपनी रक्षा क्यों नहीं कर सकी? जो इतना कुछ कर सकती थी, वह आप लोगों को जला कर खाक में भी मिला सकती थी।''

मदन के सवाल का जवाब किसी के पास नहीं था। सबकी नजर ओझा पर थी। ओझा से कोई जवाब न बन पड़ा। वह बौखला गया, ''चार अक्षर पढ़-लिख क्या गए, देवी-देवता झूठे हो गए, तुम्हारे लिए।''

''तो क्या देवी-देवता ने कहा था कि पूनो डायन है। उसको मार डालो?'' मदन ने सवाल किया।

''हां!''

''आपसे कहा था?''

''हां।''

''ठीक है, पुलिस आ रही है। यही बात आप उससे कह दीजिएगा।''

''पुलिस!'' ओझा पुलिस के नाम से ही घबरा उठा।

''अब तो, जो है सो, भारी मुसीबत है।''

''क्यों अपने देवी-देवताओं को जगाइए और पूछिए कि क्या करें अब।'' मदन ने ललकारा।

''बेटा तुम विश्वास करो, वो सचमुच डायन थी।''

मां बेटे को समझाने लगी।

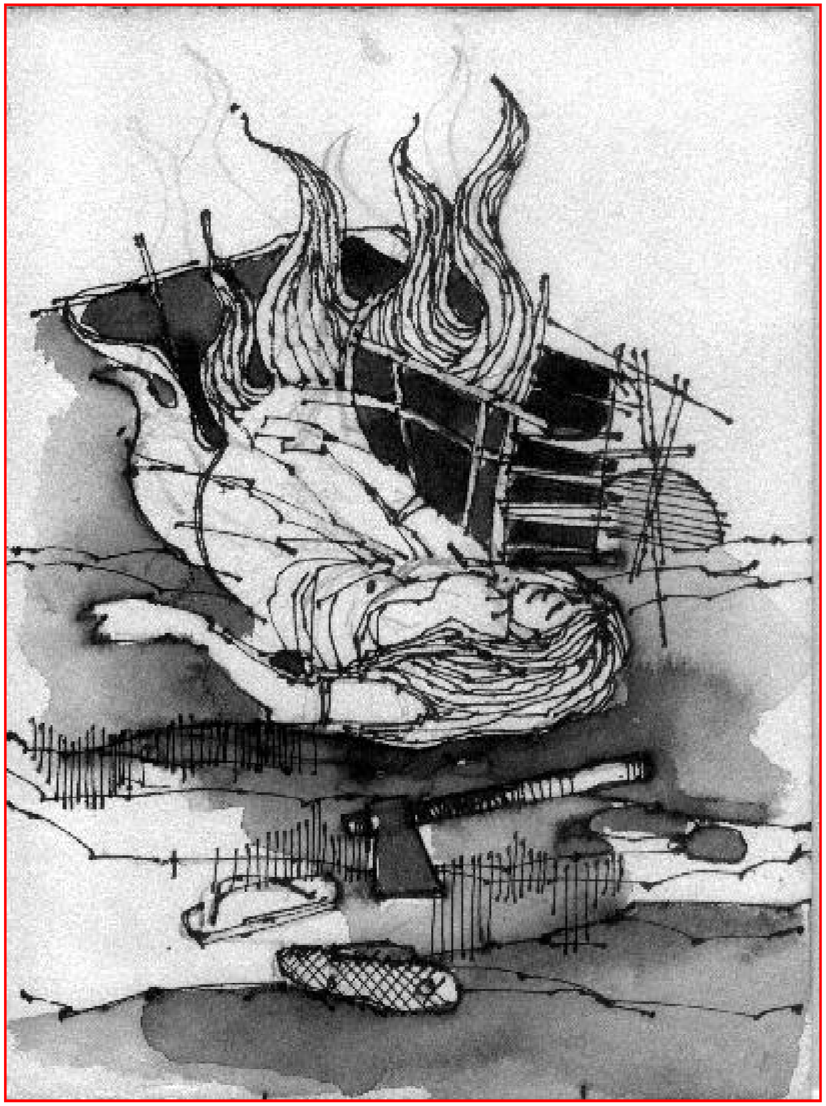

“डायन पूनो नहीं, डायन आपलोग हैं। आपकी हत्यारी बुद्धि है। है या नहीं?” मदन ने कहा और सबकी नजरें झुक गईं।

❑❑❑

कौन जिम्मेवार है?

दूबे के घर तीसरी बार भी बेटी हुई। घर में मातम छा गया। पहले ही दो-दो क्या कम थीं कि यह तीसरी आ गई?

घर में चूल्हा नहीं जला था। दूबे की मां और दूबे बरामदे में सिर पर हाथ धरे बैठे थे। पत्नी प्रसूति-गृह में अपनी नन्ही बेटी के साथ लेटी थी। वह रो रही थी। दूबे की पहली और दूसरी बेटी तक में दहशत थी। वे प्रसूति-गृह के दरवाजे पर मूरतों-सी सहमी खड़ी थीं।

डॉक्टर सक्सेना पड़ोसी थे। जच्चा-बच्चा को देखने आये। हैरान रह गये। उन्हें सब कुछ देख कर आश्चर्य हुआ। प्रसूति को खाना तक नहीं दिया गया था। बरामदे में आये तो दूबे की मां सिसक पड़ी, “इस औरत ने हमें कहीं मुंह दिखाने के लायक भी नहीं छोड़ा।” फिर वे आंख पोंछती हुई अपनी किस्मत को कोसने लगीं, “हमने आधा-आधा किलो दूध पिलाया बेटे को। मेवे के साथ। मर्दानगी की दवा खिलायी। तांत्रिक, ज्योतिषी, फकीर सबके अनुष्ठान टोने-टोटके करवा डाले कि बेटा हो। कितनी-कितनी जगह मन्नतें मानीं! जिसने जो-जो बताया वो-वो किया, मगर ......” उनकी आवाज हिचकियों में टूट गयी।

घुटनों में सिर गड़ाये दूबे ने गहरी सांस छोड़ी, “इस औरत की कोख ही ऐसी है। इस कोख से लड़का पैदा हो ही नहीं सकता।”

“लड़का या लड़की होने में स्त्री का क्या दोष?” डॉक्टर

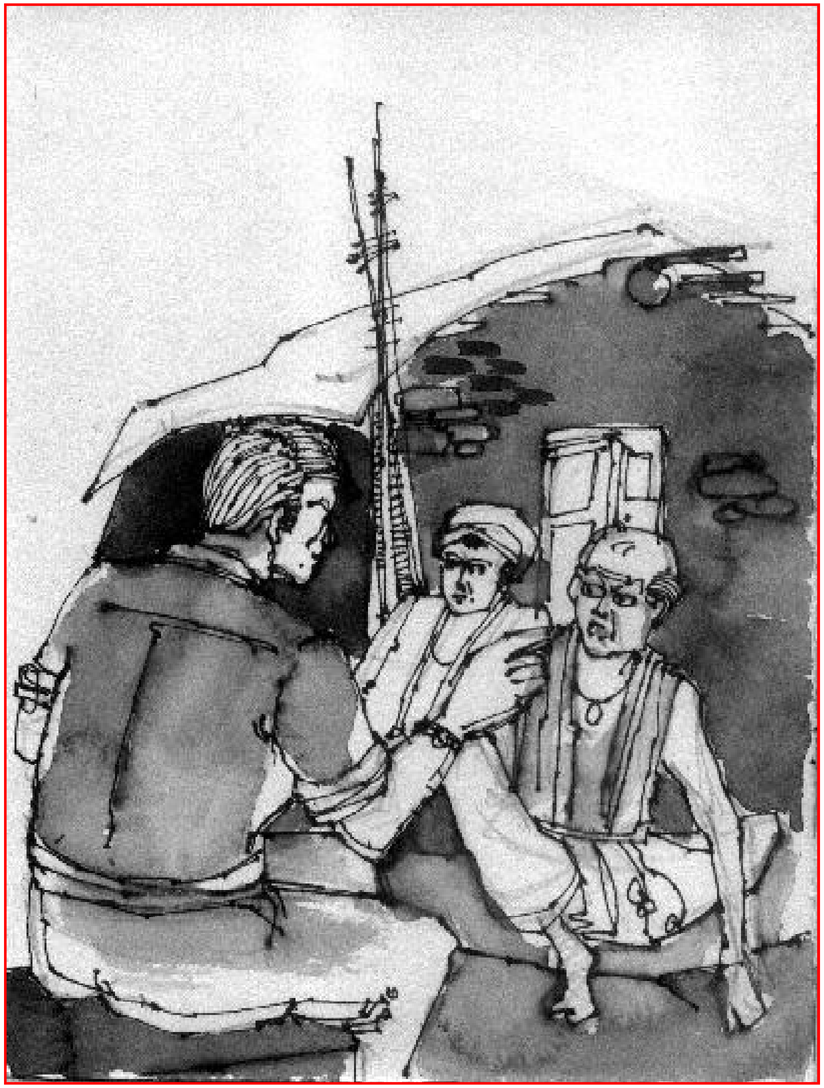

सक्सेना ने पूछा।

''फिर क्या पुरुष का यानी मेरा दोष है ?'' दूबे ने घुटने से अपना सिर निकाल कर सवाल किया।

''दोष तो किसी का नहीं। सवाल सिर्फ यह है कि इसके लिए

जि मेदार कौन है। स्त्री तो हरगिज जिम्मेदार नहीं।''

''तो क्या मैं जिम्मेवार हूँ।''

''हां।''

''कैसे ?''

''संतान के लिए बाप के वीर्य की प्रजनन कोशिका से गुणसूत्र मिलते हैं। उनमें 'एक्स' और 'वाई' दोनों होते हैं। मां के ओवम के पास सिर्फ 'एक्स' ही होते हैं। मां के 'एक्स' से बाप के 'एक्स' का मिलन हुआ तो लड़की। मां के 'एक्स' से बाप के 'वाई' का मिलन हुआ तो लड़का।''

''ये एक्स और वाई वाली बात अपनी समझ में नहीं आयी डॉक्टर साहब।'' दूबे जी के चेहरे पर न बूझ पाने का भाव छाया रहा।

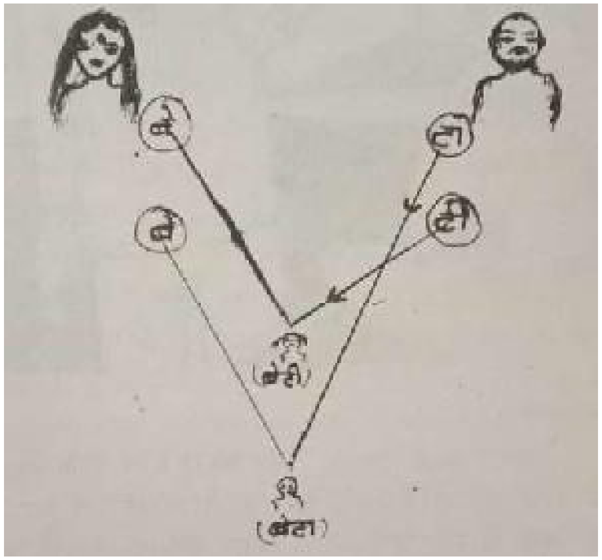

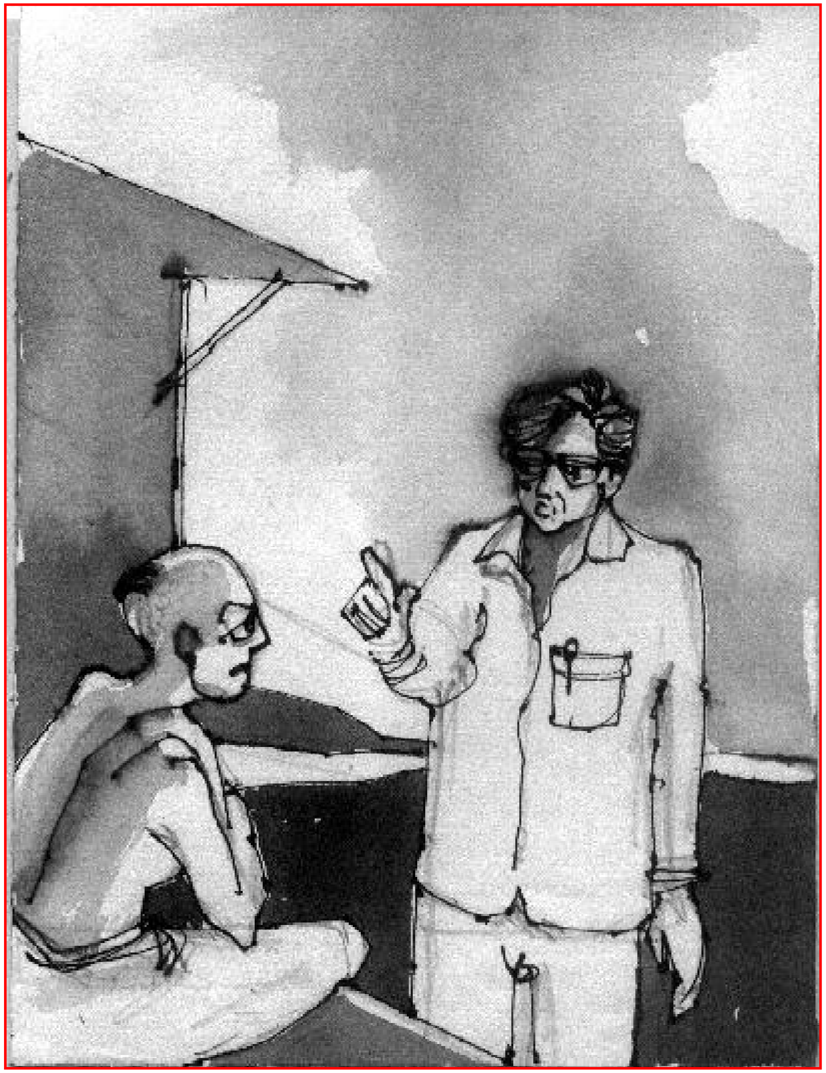

''तो फिर यूं समझिए।'' डॉक्टर साहब ने एक कागज पर यह चित्र बनाया।

डॉक्टर साहब ने बताया, ''आप देख रहे हैं कि मां के पास हैं 'बे' 'बे' ।'टा' और 'टी' हैं बाप के पास।'बे' से 'टा' मिला तो बेटा।

'बे' से 'टी' मिला तो बेटी। अब आप ही फैसला कीजिए—बेटा हो या बेटी, इसके लिए मां जि मेवार है जिसके पास हर हाल में सिर्फ 'बे' है ? या बाप जो 'टा' और 'टी' देता है ?

''आपके हिसाब से तो बाप ही जि मेवार हुआ।'' दूबे की आवाज बुझी हुई थी।

''फिर आप भाभी जी को क्यों सता रहे हैं ?'' दूबे में खिसियाहट भर रही थी, बोले, ''डॉक्टर साहब क्या ज्यादा घी-दूध या ताकत की चीज खाने से वो 'टा' 'टी' में या 'टी' 'टा' में नहीं बदल सकता ?''

हंस पड़े डॉक्टर, ''अगर ऐसा होता तो सभी पहलवानों को बेटा ही पैदा होता। फिर गर्भकाल में तो मां के ही पेट में बच्चा पलता है। इसलिए पौष्टिक आहार बाप के लिए जितना जरूरी है, मां के लिए उससे कहीं ज्यादा जरूरी है।''

''क्या ऐसा नहीं हो सकता कि बाप का 'टी' मिलने आये तो मां अपने 'बे' से मिलने ही न दे ?'' दूबे को एक युक्ति सूझी।

''तो फिर वही सवाल आप से भी ! क्या ऐसा नहीं हो सकता कि आप अपना 'टी' खुद रोक लें ! सिर्फ 'टा' को ही भेजें ... ?'' डॉक्टर सक्सेना हंस पड़े, ''दूबे जी कुछ चीजें हमारे आपके वश में नहीं हैं। उस पर सिर क्यों खपा रहे हैं ? बेटियां ही नहीं होती तो हम, आप आते कहां से ? नारी को मत नींदिये, नारी नर की खान ! आप यह क्यों नहीं सोचते कि योग्य बेटियां बेटों से किसी मायने में कम नहीं हैं। हमारे अपने ही देश में इन्दिराजी बेटी ही थीं, एवरेस्ट पर चढ़नेवाली बचेन्द्रीपाल और संतोष यादव बेटियां ही थीं। किरण बेदी और मेधा पाटेकर बेटी ही हैं और इस वक्त जो व्यक्ति सबसे ऊंची तन वाह पा रहा है वह नैना गुप्ता भी बेटी ही हैं।''

❑❑❑

भिड़ंत

बुद्धि न हाट बिकाय,
बुद्धि न चोर चुराय।
बुद्धि चढ़े जब सान,
चमके सकल जहान।
बुद्धि न बांधो भैया,
नहीं तो बूड़ी नैया।

तो बुद्धिमान साहेबान! यह कहानी भी बुद्धि की है। बुद्धि से बुद्धि को घेरने की। बुद्धि से बुद्धि की भिड़ंत की।

बुद्धि के मामले में कौन बड़ा है? कौन छोटा? कौन खरा है? कौन खोटा?

इसका जवाब किसके पास? अजी बुद्धि के सिवा और किसके पास!

बिल्कुल ताजा वाकया है। एक स्कूल में एक थे बुद्धिनाथ पंडित। एक बुद्धू प्रसाद। एक गुरु। एक विद्यार्थी।

पंडित बुद्धिनाथ सचमुच बुद्धि के नाथ! काफी सन्नाम! बुद्धू से बुद्धू को बना देते अक्लवान। कैसे? घिस-घिस कर। मांज-मांज कर! पढ़ाने का ढंग भी अनूठा। बात शुरू होती कहानियों से, पहुंच जाती नतीजे तक।

बहुत गुमान था लोगों का पंडितजी पर। पंडितजी को भी खुद पर कम गुमान न था।

अब आइये दूसरी ओर। उनका नया छात्र गणेश, पंडित जी की नजर में बिल्कुल गोबर गणेश था। वह मोटी-मोटी बातें भी न समझ पाता।

जैसे, उस दिन की बात। पंडित बुद्धिनाथ कहानी सुना रहे थे–

एक था मदारी। मदारी के पास दो चीजें थीं। एक बंदर। एक बकरी। इन्हीं की सहायता से मदारी अपना खेल दिखाता। सो एक दिन गया मेले। खरीदे कुछ केले। खाने के पहले नहाने की सूझी। ढूंढ़ लिया तालाब। बगल में थी झाड़ी। बांध दिया बंदर। बांध दी बकरी। रख दिये केले। कपड़े उतारे, चला गया नहाने।

लौट कर आया तो केले नदारद! केले कहीं नहीं। छिलके जरूर थे बकरी के सामने। उसने बंदर को देखा। वह साधु बना बैठा था।

मदारी ने कहा– ''वाह रे शेख सादी! उस्ताद से ही उस्तादी! अव्वल तो मेरे केले खा गया। दूजे, इलजाम बकरी पर चढ़ा गया!''

उसने मक्कार बंदर को चार छड़ी जमायी। कहानी खत्म हो गयी।

पंडित जी ने पूछा– ''बच्चों अब तुम लोग बताओ। केले बंदर ने खाये, बकरी ने नहीं। मदारी ने इसे कैसे समझा?''

उन्होंने सामने वाले लड़के से पूछा– बोलो।

वह लड़का सिर झुकाकर खड़ा हो गया।

दूसरे लड़के से पूछा –''तुम?''

लड़के ने कहा–''सर, गिलहरी ने बताया होगा।''

पंडित जी ने पूछा –''यह गिलहरी कहां से टपक पड़ी?''

सभी लड़के हंस पड़े।

आखिर बुद्धिनाथ पंडित ने बताया–''बकरी केले खाती तो केले के छिलके भी खा जाती। यह अक्ल तो बंदर के ही पास है। वह सिर्फ गूदे खाता है। छिलके छोड़ देता है। यहां भी गूदे खा लिए गये थे। छिलके पड़े हुए थे। जाहिर हो गया कि केले किसने खाये। सो केले खा गया बंदर। छिलके रख दिये बकरी के आगे। क्यों? इसलिए कि पिटे तो

बेवकूफ बकरी पिटे। बंदर पर शक ही न जाए।

लड़के दंग थे। कुछ के मुंह से निकला– इस्स! कुछ के मुंह से– वाह! कुछ ने अपनी अक्ल को कोसा। मगर एक लड़का इनसे अलग था। उसने न 'इस्स' किया, न 'वाह'! वह था गणेश।

पंडित जी की त्यौरी चढ़ गई। उन्होंने पूछा–"क्यों गोबर गणेश? कहानी समझ में नहीं आयी?"

गणेश उठ कर खड़ा हो गया। बोला–"सर, कुछ आयी! कुछ नहीं आयी।"

पंडित जी ने पूछा–"कितनी आयी? कितनी नहीं आयी?"

गणेश ने कहा–"सर, बंदर ने केले खाये। केले के छिलके डाल दिये बकरी के आगे।"

पंडित जी बोले–"हां, तो... ?"

गणेश ने पूछा–"मगर बकरी तो छिलके खाती है। छिलके उसके सामने पड़े रहे। उसने खाये क्यों नहीं?"

पंडित जी भन्ना कर बोले–"नहीं खाये तो नहीं खाये। तुम्हें उससे क्या?"

गणेश ने कहा–"इसलिए कि तब छिलके न मिलते। मदारी को पता ही न चलता।"

पंडित बिगड़ पड़े–"मैंने कहा न! बकरी के सामने छिलके पड़े थे।"

गणेश ने कहा–"तब तो बकरी बंदर से ज्यादा चालाक निकली। छिलके नहीं खाये। पाप का सबूत पड़ा रहा। बंदर की मक्कारी पकड़ी गयी। फिर आपने बकरी को बेवकूफ क्यों कहा?"

पंडित जी बिगड़ कर भूत। डांट दिया–"बैठ जाओ बुद्धू प्रसाद!"

लड़के डर कर चुप हो गये। उस दिन से गणेश का नाम हो गया बुद्धू प्रसाद।

तो यह थी बुद्धिनाथ और बुद्धू प्रसाद की पहली भिड़ंत। आगे भी भिड़ंत होती रही। पंडित जी विद्यार्थी को डांट कर चुप करा देते। दूसरी

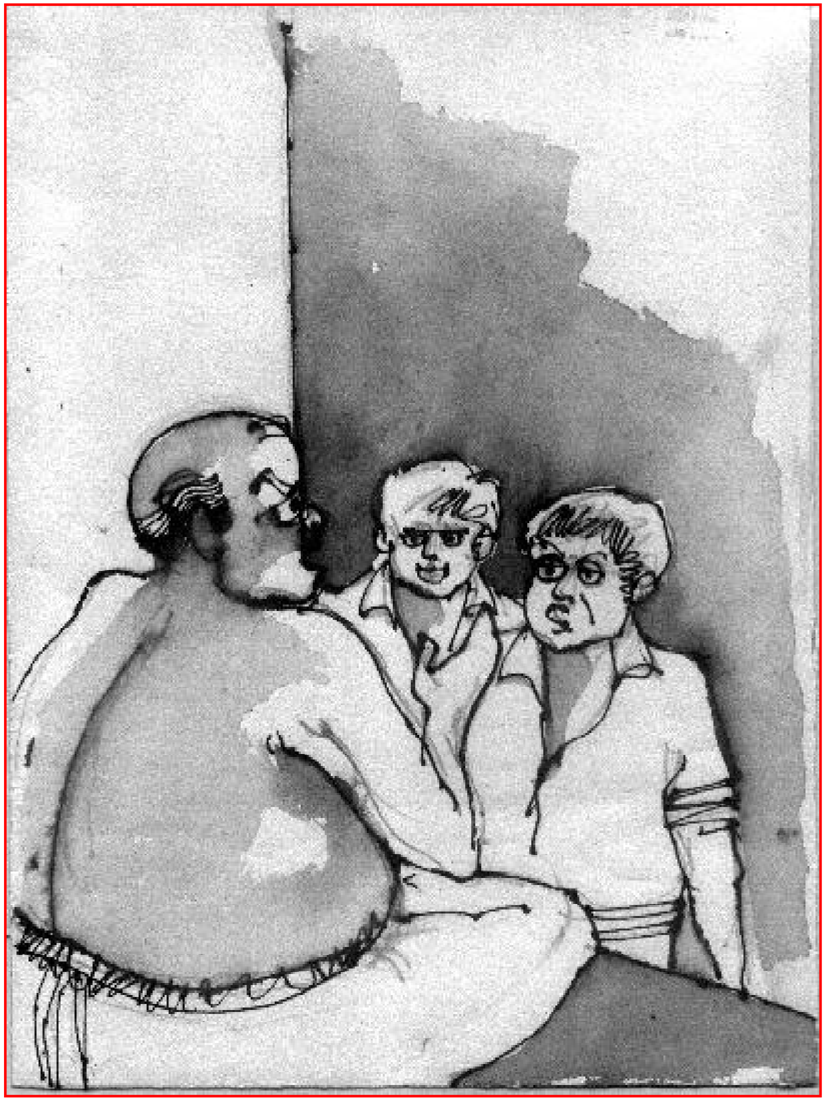

बड़ी भिड़ंत में नाम फिर बदला। बुद्धू प्रसाद से हो गया वह 'सूखा काठ'

यह ऊंची कक्षा की बात है। बुद्धिनाथ जी कविता के बारे में बता रहे थे। इसी क्रम में वाणभट्ट की कथा आयी।

पंडित जी ने कहा–"वाणभट्ट एक बड़े कवि थे। वे सम्राट हर्षवर्धन के दरबार में रहते थे। कादंबरी उन्हीं की कविता पुस्तक है। बहुत मान–सम्मान है उसका। उसी की रचना से जुड़ी है यह कहानी। हुआ यूं कि वाणभट्ट की आयु पूरी होने को आयी। अभी कादंबरी पूरी न हो पायी थी। संयोग से उनके दोनों लड़के भी कवि थे। सोचा, किसी लड़के को सौंप दूं। बाकी वह पूरी कर लेगा। मगर किसे सौंप देते? कविता थी, मजाक नहीं। योग्य बेटे को ही सौंपना चाहिए। मगर योग्यता की परख कैसे हो? उन्होंने कहा– कविता लिखो। लड़कों ने पूछा– किस विषय पर? सामने एक चैला पड़ा था। वाणभट्ट ने कहा–इस पर।

कठिन परीक्षा थी। कविता! वह भी चैले पर! फिर भी कविता लिखनी ही थी। पिता की आज्ञा थी। जिसमें जितनी प्रतिभा, वैसी ही बनी कविता।

बड़े लड़के ने लिखा–सूखा काठ पड़ा है आगे।

छोटे ने लिखा–बिलस रहा है नीरस तरुवर आंगन में।

वाणभट्ट प्रसन्न हुए। बोले– मुझे मेरा वारिस मिल गया। उन्होंने छोटे लड़के को प्यार से बुलाया, दुलराया और बोले–"शाबाश! मेरे अधूरे काम को तुम पूरा करो।"

कहानी खत्म हुई। बुद्धिनाथ पंडित ने पूछा–"बच्चो, वाणभट्ट ने एक फैसला दिया। यह फैसला उचित था या अनुचित?"

लड़के बोल पड़े– उचित!

बुद्धिनाथ जी ने खुश होकर कहा–"शाबाश! मगर क्यों?"

एक लड़के ने कहा–"दूसरी कविता अच्छी थी, सर।"

बुद्धिनाथ जी ने पूछा–"क्या अच्छाई थी?"

लड़के बोल न पाये। बुद्धिनाथ पंडित ने कहा–"कहने को यह

भी कविता थी। वह भी। पर सवाल अच्छी कविता का था। बड़े लड़के ने बात सीधे–सीधे रख दी। छोटे ने उसे सजा–संवार कर रखा। बड़े की कविता कविता न थी। थी भी तो स्तर बहुत घटिया था। एक तो सूखा काठ। फिर कविता भी सूखी, सपाट! अब छोटे को देखो। उसने सूखे काठ को क्या कहा? नीरस तरुवर! 'पड़ा है' नहीं कहा। कहा, 'विलास कर रहा है।' सरस भाषा! ऊंची प्रतिभा! दोनों मिल गये। सूखे काठ में भी चार चांद लग गये। इसे कहते हैं कवित्व प्रतिभा!"

बोलते-बोलते पंडित बुद्धिनाथ रुक गये। सारा क्लास अपने गुरु का कायल हो चुका था। बुद्धिनाथ जी की बुद्धि का सिक्का जम गया था। मगर हाय रे बुद्धू प्रसाद! उसके चेहरे पर कोई चमक नहीं।

पंडित जी ने पूछा-''क्या हुआ बुद्धू प्रसाद जी? अब आप ऊंचे दर्जे में आ गये हैं। अच्छी कविता क्या है? समझ नहीं पाये आप?''

बुद्धू प्रसाद उठकर खड़े हो गये। बोले नहीं कुछ।

पंडित जी ने पूछा-''बोलते क्यों नहीं?''

बुद्धू प्रसाद ने कहा-''सर एक शंका है।''

पंडित जी ने मुंह बनाया-''कैसी शंका? लघु या दीर्घ?''

(लघु शंका = पेशाब, दीर्घ शंका = पाखाना)

पंडित जी की चुटकी पर सारे लड़के हंस पड़े।

बुद्धू प्रसाद तनिक भी विचलित नहीं हुआ। बोला-''सर वह चैला ही तो था। उसे तरुवर या पेड़ कहा गया। यह कहां तक उचित है? कहा गया कि वह विलास कर रहा है। यानी मौज कर रहा है। यह भी कहां तक जायज है?''

पंडित जी का पारा सातवें आसमान पर। बिगड़ कर बोले-''यह बुद्धू प्रसादों का ठस्स दिमाग नहीं। कवि का दिमाग है।''

बुद्धू प्रसाद ने शांत रह कर कहा-''मैंने कब इनकार किया सर?''

पंडित जी झुंझला उठे। बोले-''फिर कहां शंका है?''

बुद्धू प्रसाद ने कहा-''बात को किस तरह कहना ज्यादा उचित है? जैसी है, वैसी कह दें या उसमें जोड़-घटाव कर दें। वैसे ही रख दें या चाशनी में चुभो कर?''

पंडित जी पिड़के।''आप किसे अच्छा मानते हैं, सर?''

बुद्धू प्रसाद ने कहा-''कविता सिर्फ हमें आनंद दे या हमारी समझ को भी साफ करे। उसे विस्तार दे-कसौटी यह होनी चाहिए सर।''

पंडित जी कुढ़ कर बोले-''अच्छा!''

बुद्धू प्रसाद ने कहा-''छोटे लड़के में कवित्व प्रतिभा है।'' मगर वहां शाबाशी लूटने का मोह भी है। इस मोह में वह बातों को बढ़ा-चढ़ा कर कहता है। खामखा चाशनी में डुबोता है। इससे सच्चाई की पहचान गड़बड़ा सकती है। शंका यही है सर।

बुद्धू प्रसाद की बात अभी पूरी नहीं हुई थी। इधर पंडित बुद्धिनाथ का धीरज जवाब दे गया। बोले ''हाय रे मेरे विद्यार्थी! विद्या की अरथी!''

''सूखा काठ पड़ा है आगे
चुप रह चुप रह हाय अभागे!''

सारा क्लास हंस पड़ा- क्या प्रोमोशन पाया गणेश ने! गणेश से गोबर गणेश! गोबर गणेश से बुद्धू प्रसाद! अब बुद्धू प्रसाद से सूखा काठ!

अब गणेश कुछ भी न बोलता। लड़के उसे 'सूखा काठ' कह कर चिढ़ाते। वह उन्हें हंस कर टाल जाता। और बुद्धिनाथ पंडित! वे तो उसे देखते ही बिदक उठते। उन्हें उसका बोलना तो अखरता ही था। उसका न बोलना भी अखरता। सांप-छछुंदर की गति थी- न उगलते बनता था, न निगलते। क्लास भी खत्म होने को आये।

सूखा काठ पड़ा है आगे! सूखे काठ की बुद्धि को नाथना अभी बाकी है। न नाथ पाये तो कैसे बुद्धिनाथ! इस बार या तो इस पार या उस पार। चाहे जो हो, अपना सिक्का मनवा कर छोड़ेंगे। इस तरह शुरू हुई तीसरी भिड़ंत। तीसरी ही नहीं, आखिरी भिड़ंत भी।

पंडित बुद्धिनाथ क्लास में आये। पूरी तरह से तैयार! बोले-''बच्चे, यहां की पढ़ाई पूरी होने को आयी। आप सब अपने-अपने घर

जाओगे। मगर.... कविता में कहूं तो–

शिक्षा अभी अधूरी है।

अब भी लंबी दूरी है।''

जीवन में पग–पग पर परीक्षा आएगी। कदम–कदम पर इ तहान।

सारा क्लास उन्हें आदर से सुन रहा था। उनका 'सूखा काठ' यानी गणेश भी। पंडित जी खुश हुए। फिर उन्होंने वह कहानी उठा ली। बोले –

''बहुत दिनों की बात है। कौशल के राजा कहीं जा रहे थे। संयोग देखिए। काशी के राजा भी उसी रास्ते से आ रहे थे। एक ही समय। एक ही रास्ता। रास्ता भी संकरा। और दोनों राजा रथ पर! दोनों के रथ आमने–सामने रुक गये। अब एक रुके तो दूजा जाए। दोनों रथ साथ–साथ नहीं जा सकते थे। मगर सवाल टेढ़ा था। कौन पहले जाए? कौन तब तक रुका रहे? दोनों राजा। कोई किसी से कम नहीं। कोई पीछे हटे तो कैसे? फिर क्या किया जाए?

राजा रथों में बैठे रहे। दोनों के सारथी बात करने लगे। कौशल के सारथी ने कहा–''तुम जरा परे हट जाओ। मेरे रथ को निकल जाने दो।''

काशी के सारथी ने कहा–''तु हीं जरा परे हट जाओ न! मेरा रथ निकल जाए।''

समय बीतता गया। सारथी बहस करते रहे। आखिर वे एकमत हुए। तय हुआ, जो महान हो, वह पहले जाए। और महानता की माप– उनके गुण।

कौशल के सारथी ने कहा– मेरे नरेश पराक्रमी हैं, प्रतापी हैं।

काशी के सारथी ने कहा– मेरे नरेश भी पराक्रमी और प्रतापी हैं।

कौशल के सारथी ने कहा–मेरे राजा गुणों की कद्र करते हैं।

काशी के सारथी ने कहा– मेरे राजन भी।

कांटे–कांटे की लड़ाई थी। फैसला होता नहीं दिख रहा था। तभी कौशल के सारथी ने कहा– मेरे महाराज मित्र से मित्र की तरह पेश आते हैं। शत्रु से शत्रु की तरह।

काशी के सारथी ने जवाब दिया – मेरे महाराज मित्र से तो मित्र की तरह पेश आते ही हैं। वे शत्रु से भी मित्र की तरह पेश आते हैं। वे सत्यवान हैं, क्षमाशील हैं, विनयशील हैं।

कौशल नरेश ने सुना और गुना। उन्होंने सारथी को इशारा किया। सारथी ने रथ पीछे खिसका लिया। खुद सिर झुका कर खड़ा हो गया। काशी नरेश की महानता सिद्ध हो चुकी थी। उन्होंने खुशी–खुशी पहले प्रस्थान किया।

कहानी पूरी हो चुकी थी। पंडित बुद्धिनाथ संतुष्ट थे।

बोले–''बच्चों यह निर्णय सही था न?''

छात्र बोले–''बिल्कुल सही सर!''

पंडितजी बोले–''हां बच्चे! मित्र को तो सभी मित्र मानते हैं। बड़ा वह है, जो शत्रु को भी मित्र माने। वह बड़ा है जो पराक्रमी और प्रतापी हो। साथ–साथ सत्यवान, क्षमाशील, और विनयी भी हो। क्यों गणेश? अब तो कोई शंका नहीं है?''

गणेश उठ कर खड़ा हो गया 'सूखे काठ' की तरह।

पंडित जी ने कहा–''बोलो।''

गणेश हिचकिचाया–''सर, बोलने से आप नाराज हो जाते हैं।''

पंडित जी ने अभयदान दिया–''नहीं नाराज होंगे। बोलो।''

गणेश बोला–''क्षमा करें। यह कहानी भी साफ नहीं है।''

पंडित जी हैरान! इस शैतान की बाल की खाल निकालने की आदत पड़ गयी है। बीसियों बार उन्होंने सुनाई थी यह कहानी। सभी ने

इससे शिक्षा ली। सभी ने सराहा। मगर इस पर कोई असर ही नहीं। उन्होंने अपने गुस्से को किसी तरह दबाया। बोले, ''क्या साफ नहीं है?''

गणेश ने कहा–''काश! यह बातों में नहीं, आचरण में होता।''

पंडित जी खीझ उठे–''तुम कहना क्या चाहते हो?''

गणेश बोला–''दोनों राजाओं में पहले तो राज-हठ है। अपनी झूठी महानता का अहंकार भी।''

पंडितजी भन्ना कर बोले–''तुम्हारी अक्ल पर पत्थर पड़ा है? शत्रु से भी दोस्ती क्या महानता नहीं है? यह क्षमा नहीं? विनय नहीं?''

गणेश बोला–''बिल्कुल है सर?''

पंडित ने पूछा–''फिर काशी नरेश महान नहीं हुए।''

गणेश ने कहा–''होते सर, अगर प्रमाण होता।''

पंडित जी बोले–''अब कहां से ले आएं और प्रमाण?''

गणेश बोला–''कहानी में ही सर! काशी नरेश सचमुच क्षमाशील और विनयशील होते तो मान लेता। पर वे थे नहीं। वैसा होते तो खुद अपने रथ को पीछे कर लेते। कौशल नरेश को जाने देते।''

बुद्धिनाथ पंडित का सिर चकरा गया। बोले–''तो फिर कौन महान था?''

गणेश बोला–''सच पूछा जाए तो कोई नहीं। महान होना खेल नहीं है।''

पंडित जी ने पूछा –''फिर भी....। दोनों में से एक को चुनना हो तो?''

गणेश बोला–''तब कौशल नरेश सर! काशी नरेश न क्षमावान सिद्ध हुए, न विनयशील। जब ये चीजें झूठी हो ही गईं तो सत्यवान भी

नहीं। कौशल नरेश ऐसे न थे। सारथी ने बताया कि वे कद्रदान थे। उन्होंने कद्र की। उन्होंने सत्य को स्वीकारा। काशी नरेश के रथ को सादर जाने दिया। क्षमाशील नहीं थे। उन्होंने दावा भी नहीं किया। मगर सत्यवान और विनयी वे ही थे, काशी नरेश नहीं।''

पंडित बुद्धिनाथ सिर पर हाथ धर कर बैठ गये। फिर बोले–''मैं हारा, तू जीता। मैं तुझे आदमी नहीं बना सका।''

हम अक्ल के पीछे लिये लाठी को घूमते

लोगों ने हमें अक्ल का दुश्मन बना दिया।

जा काठ का उल्लू, तेरा.........''

पंडित जी वाक्य पूरा न कर सके। पीछे से आ गये हेडमास्टर विवेकजी। बोले–''रुक जाइये मास्टर साहब।''

पंडित जी चौंक कर बोले–''आप?''

विवेक जी ने कहा–''हां पंडित जी। मुझे बीच में आना पड़ा। लड़के को रोकिए नहीं। उसे जायज सवाल करने दीजिए। जरूरी नहीं कि आप उससे सहमत हों तो भी। वर्षों से आप पढ़ाते आ रहे हैं वही कहानियां। कभी उलट-पलट कर जांचा नहीं उनको। अगर किसी ने उंगली उठायी तो बुरा मान गये। उनकी आग पर पानी न डालें। उनकी धार को कुन्द न करें। मैं आपकी और गणेश की बुद्धि की भिड़ंत को जानता हूं। चुपके-चुपके सुना और देखा मैंने। जी हां। लकीर के फकीर कुछ नहीं करेंगे। करेंगे तो यही गणेश जैसे लड़के जो उसके दास नहीं हैं। बच्चे प्रकृति की कमान से छूटे हुए तीर हैं। उन्हें रोकें नहीं। वे अपना रास्ता खुद बना लेंगे। खलील जिब्रान ने यही कहा था। सारी नजरें गणेश की ओर घूम गईं।''

वह रो रहा था। कहीं सूखा काठ भी पसीजता है!

❑❑❑❑